ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

प्राचीन भारतीय संस्कृति में याग–विधान एवं अनुष्ठान में यजु संहिता का महत्व

सुनीता सिंह
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
गोचर कृषि इण्टर कालेज,
रामपुर, शहारनपुर

सारांश

यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता के अनुसार 'सम्पूर्ण संहिता कुल 40 अध्यायों 303 अनुवाकों तथा 1975 कण्डिकाओं (मन्त्रों) में विभक्त है। प्रारम्भिक दो अध्यायों में दर्श–पौर्णमास यज्ञों से सम्बद्ध मन्त्र है। तृतीय अध्याय में अग्निहोत्र तथा चातुर्मास्य यज्ञोपयोगी मन्त्रों का संकलन है। इस वेदी का निर्माण विशिष्ट प्रकार के तथा विशिष्ट स्थान से लाये गये कुल 10800 ईंटों (ठतपबो) से किया जाता है। यहाँ सोलहवें अध्याय में 'शतरूद्रीय होम' तथा अट्ठारहवें अध्याय में 'वसोर्धारा' सम्बन्धी मन्त्र निर्दिष्ट है। उन्नीसवें से इक्कीसवें अध्याय तक सौत्रामणि तथा 22–25 अध्याय तक अश्वमेघ यज्ञ का विधान किया गया है। छब्बीसवें से उन्तीसवें अध्याय पर्यन्त खिल मन्त्रों (परिशिष्ट) का विवेचन किया गया है। तीसवें अध्याय में पुरूषमेघ की चर्चा है जबकि 31 अध्याय में पुरूषसूक्त का वर्णन है तथा चौतीसवें अध्याय के प्रारम्भ में छः मन्त्रों का शिवसंकल्प सूक्त वर्णित है, जो मन तथा मानसिक–वृत्तियों के स्वरूप के प्रतिपादन में अत्यन्त उपादेय है। 36 वें से 38 वें अध्याय में ' प्रवर्ग्ययाग ' का विशद वर्णन मिलता है। इस संहिता के अन्त में चालीसवें अध्याय का वर्ण्य विषय ईशावास्योपनिषद् है। यही एकमात्र वह सर्वप्राचीन उपनिषद् है जो संहिता का भाग है। ध्यातव्य है कि यजुर्वेद संहिता से सम्बन्धित ऋत्विक को अध्वर्यु कहा जाता है।

मुख्य शब्द : यजुः संहिता, यजुर्वेद की शाखाएँ, कृष्ण यजुर्वेद, तैत्तिरीयं संहिता, मैत्रायणी संहिता, कठ संहिता कपिष्ठल कठ संहिता, शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण, ईशावस्योंपनिषद् वृहदारण्यकोपनिषद, मैत्रायण्युपउपनिषद, कठोपनिषद् तैत्तिरीयोपनिषद श्वेताश्वतरोपनिषद।

प्रस्तावना

यजुर्वेद संहिता, यजुसों का संग्रह है। यजुस का अर्थ होता है– जिसमें अक्षरों की संख्या नियत न हो – ''अनियताक्षरावसानो यजुः।'' इसके अलावा '' गद्यात्मकों यजुः एवं ''शेषे यजुः शब्द''।। का भी तात्पर्य यही है कि– ऋक और साम से भिन्न गद्यात्मक मन्त्रों का अभिधान यजुस् है। यजुर्वेद संहिता के मुख्य देवता वायु तथा आचार्य वेदव्यास के शिष्य वैशम्पायन जी है। महाभाष्यः चरणव्यूह एवं पुराणों के अनुसार यजुर्वेद की 100, 101, 109, 86 इत्यादि शाखाओं का पता चलता है। तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ एवं कपिष्ठल, ये चार कृष्ण यजुर्वेद तथा वाजसनेयी और काण्व यें दो शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएँ है।

अध्ययन का उद्देश्य

यजुर्वेद संहिता में प्रासंगिक तथा प्रमाणिक विचारों व भ्रान्तियों को स्पष्ट करना साथ ही इसकी विशिष्टता को इस पत्र के माध्यम से ज्ञानार्जन करना।

यजुर्वेद की शाखायें

काण्वसंहिता

शुक्ल यजुर्वेद की प्रधान शाखायें माध्यन्दिन तथा काण्व है। काण्वसंहिता का एक सुन्दर संस्करण मद्रास के अन्तर्गत किसी 'आनन्दवन' नगर तथा औंध से प्रकाशित हुआ है जिसमें अध्यायों की संख्या 40, अनुवाकों की 328 तथा मन्त्रों की 2086 है, अर्थात् माध्यन्दिन–संहिता के मन्त्रों (1975) से यहाँ 111 मन्त्र अधिक है। काण्व शाखा का सम्बन्ध पांचरात्र आगम के साथ विशेष रूप से पांचरात्र संहिताओं में सर्वत्र माना गया है।[1]

कृष्ण यजुर्वेद

शुक्लयजुः में जहाँ केवल मन्त्रों का ही निर्देश किया गया है, वहाँ कृष्णयजुः में मन्त्रों के साथ तद्विधायक ब्राह्मण भी सम्मिश्रित है। चरणव्यूह के अनुसार कृष्णयजुर्वेद की 85 शाखायें हैं। जिसमें आज केवल 4 ही शाखायें तथा

सत्सम्बद्ध पुस्तकें उपलब्ध होती हैं–1. तैत्तिरीय 2. मैत्रायणी 3. कंठ 4. कपिष्ठल–कठ शाखा।

तैत्तिरीय संहिता

संहिता में 7 काण्ड, तदन्तर्गत 44 प्रपाठक तथा 631 अनुवाक है। विषय वही शुक्ल–यजुर्वेद में वर्णित विषयों के समान ही पौरोऽश, यजमान, बाजपेय, राजसूय आदि नाना यागानुष्ठानों का विशद वर्णन है।

मैत्रायणी संहिता

इस संहिता में चार काण्ड है। समग्र संहिता में 1244 मन्त्र हैं, जिनमें 1701 ऋचायें ऋग्वेद से उद्धृत की गई है। प्रत्येककांड में ऋग्वेद से मन्त्र उद्धृत हैं और ये मन्त्र ऋग्वेद के भिन्न–भिन्न मण्डलों में पाये जाते है। यहाँ उद्धृत मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल (411 मन्त्र), दशम (323 मन्त्र) तथा षष्ठ मण्डल (157 मन्त्र) से विशेष सम्बन्ध रखते हैं। मैत्रायणी कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्ध रखती है।

कठ संहिता:[3]

यजुर्वेद की 27 मुख्य शाखाओं में कठ शाखा अन्यतम है। कठ संहिता में पांच खण्ड हैं, जो क्रमशः इठिमिका, मध्यमिका, ओरिमिका, यज्यानुवाक्या काण्ड तथा अश्वमेधानुवचन के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन खण्डों के टुकड़ों का नाम 'स्थानक' है, जो नाम वैदिक साहित्य में अन्यत्र नहीं मिलता। इस संहिता में स्थानक की संख्या 40, अनुवाचनों की 13, अनुवाक्यों की 843, मन्त्रों की 3091 तथा मन्त्र–ब्राह्मणों की सम्मिलित संख्या 18 हजार है। इन निर्दिष्ट मुख्य भागों तथा दृष्टियों में कतिपय प्रमुख याग ये है– दर्श पौर्णमास, अग्निष्टोम, आधान काम्य इष्टि, निरूढ़ पशुबन्ध, वाजपेय, राजसूय, अग्निचयन, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, सौत्रामणी और अश्वमेघ। कृष्ण यजुर्वेद के चारों मन्त्र संहिताओं में केवल स्वरूप ही की एकता नहीं है, प्रत्येक उनमें वर्णित अनुष्ठानों तथा तन्निष्ठपादक मन्त्रों में भी बहुत ही अधिक साम्य है।[4]

कपिष्ठल कठ संहिता

काठकसंहिता से इस संहिता में अनेक बातों में प्रार्थक्य तथा वैभिन्य है। इसका मूल ग्रन्थ काठक संहिता के समान होने पर भी उसकी स्वरांकन पद्धति ऋग्वेद से मिलती है। ऋग्वेद के समान ही यह अष्टक तथा अध्यायों में विभक्त है। इस प्रकार कपिष्ठल कठसंहिता पर ऋग्वेद का ही सतिशय प्रभाव लक्षित होता है। ग्रन्थ अधूरा ही है। अन्य संहिताओं के साथ तुलना के निमित्त यह अधूरा भी ग्रन्थ बड़ा ही उपादेय तथा उपयोगी है। विषय शैली कठ संहिता के समान ही है।

यजुर्वेदीय ब्राह्मण

शतपथ ब्राह्मण

ब्राह्मण ग्रन्थों में सबसे अधिक महत्वशाली विपुलकाय तथा यागानुष्ठान का सर्वोत्तम प्रतिपादक ग्रन्थ यही शतपथ–ब्राह्मण है। शुक्ल–यजुर्वेद की उभयशाखाओं–मध्यन्दिन तथा काव्य शाखाओं– में यह उपलब्ध होता है। विषय की एकता होने पर भी उसके वर्णनक्रम तथा अध्यायों की संख्या में यहाँ अन्तर पड़ता है।

माध्यन्दिन शतपथ के प्रथम काण्ड में दर्शपूर्णमान इष्टियों का तथा द्वितीय काण्ड में अधान, अग्निहोत्र, पिण्डपितृयज्ञ, अग्रायण और चातुर्मास्य का वर्णन है। सोमयाग के नाना यागों के विवरण से सम्बद्ध तृतीय तथा चतुर्थ काण्ड है। पंचम कांड में वाजपेय याग तथा राजसूय याग का विवेचन है। 6 काण्ड से लेकर 10 काण्ड तक उषासम्भरण, विष्णुक्रम, वनीवाहनकर्म (6 काण्ड), चयन का सम्पूर्ण वर्णन (7 तथा 8 कांड), शतरूद्रीय होम (9 काण्ड) तथा चित्तिसम्पति तथा उपनिषद् रूप से अग्नि की उपासना आदि का वर्णन (10 काण्ड) किया गया है। प्रथम कांड–पंचक में याज्ञवलक्य का जो चतुर्दश कांड में समस्त शतपथ के कर्ता माने गये हैं–प्रामाण्य सर्वातिशायी है, परन्तु द्वितीय काण्ड–पंचक (6 कांड–10 कांण्ड) में याज्ञवल्क्य का नाम निर्देश न होकर शाण्डिल्य ऋषि का ही प्रमाण्य निर्दिष्ट है। ये ही शाण्डिल्य दशम कांड में वर्णित 'अग्निरहस्य' के प्रवक्ता बतलाये गये हैं। अश्वमेघ, पुरूषमेघ तथा सर्वमेघ का विषद विवेचन 13 वें कांड में तथा प्रवर्ग्य याग का वर्णन 14वें कांड में किया गया है शतपथ के अन्त में वृहदारण्यक उपनिषद है।

तैत्तिरीय ब्राह्मण

तैत्तिरीय–ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेद शाखा का एकमात्र उपलब्ध ब्राह्मण है। प्रथम तथा द्वितीय काण्ड में आठ अध्याय (मूल नाम प्रपाठक), तथा तृतीय काण्ड में 12 अध्याय जिनके अवान्तर खण्ड 'अनुवाक' के नाम से प्रसिद्ध है। तैत्तिरीय ब्राह्मण के प्रथम काण्ड में अग्न्याधान, गवामयन, वाजपेय, सोम नक्षत्रेष्टि तथा राजसूय का वर्णन है। द्वितीय काण्ड में अग्निहोत्र, उपहोत्र, सौत्रामणी (जिसमें सोम के स्थान पर सुरा के पान का विधान है।) तथा वृहस्पतिसव, वैश्यसव आदि नाना सत्रों का विवरण दिया गया है। प्रत्येक अनुष्ठान के उपयोगी ऋग–मन्त्रों का भी सर्वत्र निर्देश है। इनमें से अनेक ऋचायें ऋग्वेद से उद्धृत है, इस काण्ड में अनेक मन्त्रों में ऋग्वेद के प्रश्नेां का भी उत्तर मिलता है। तृतीय काण्ड अवान्तरकालीन रचना माना जाता है जिसमें प्रथमतः 'नक्षत्रेष्टि' का विस्तृत वर्णन है। चतुर्थ प्रपाठक में पुरूषमेध के उपयुक्त पशुओं का वर्णन है, जो कृष्ण यजुर्वेद की संहिता में उपलब्ध नहीं होता, प्रत्युत माध्यन्दिन–संहिता से वहाँ उदधृत किया गया है। इस काण्ड के अन्तिम तीन (10–12) प्रपाठक 'काठक' नाम से यजुर्वेदियों के द्वारा अभिहित किये जाते हैं।

यजुर्वेदीय आरण्यक

वृहदारण्यक

जैसा कि नाम से विदित होता है; यह वस्तुतः आरण्यक ही है, तथा यजुर्वेद से सम्बद्ध है, परन्तु आत्मतत्व की विशेष विवेचना के कारण यह उपनिषद् माना जाता है और वह भी प्राचीनतम तथा मान्यतम्। कृष्णयजुर्वेदीय मैत्रायणीय शाखा का भी एक आरण्यक है, जो मैत्रायणी उपनिषद् कहलाता है।[2]

तैत्तिरीय आरण्यक

इस आरण्यक में दश परिच्छेद या प्रापाठक है, जो साधारण रीति से 'अरण' कहे जाते हैं तथा इनका नामकरण इनके आद्य पद के अनुसार होता है। जैसे प्रथम का नाम है, भद्र 2. सहबै, 3. चिति, 4. युंजते 5. देव वै 6. परे, 7. शिक्षा 8. ब्रह्मविद्या 9. भृगु 10. नारायणीय। इसमें सप्तम अष्टम और नवम प्रपाठक मिलकर 'तैत्तिरीय उपनिषद् कहलाते है। दशम प्रापाठक भी महानारायणीय

उपनिषद् हैं, जोइस आरण्यक का परिशिष्ट माना जाता है। प्रपाठकों का विभाजन 'अनुवाकों में है, जोइस आरण्यक का परिशिष्ट माना जाता है। प्रपाठकों का विभाजन 'अनुवाकों' में है, तथा नवम प्रापाठक तक के समस्तअनुवाकसंख्या में 170 हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण के समान ही यहाँ भी प्रत्येक अनुवादक में दश वाक्यों की एक इकाई मानी गयी है तथा दशक का अन्तिम पद अनुवाक्क के अन्त में परिगणित किया गया है। इस आरण्यक में ऋग्वेदा स्थ ऋचाओं का उद्धरण पर्याप्त संख्या में किया गया है। प्रथम प्रपाठक आरूण–केतुक नामक अग्नि की उपासना तथा तदर्थ इष्टकाचयन का वर्णन करता है। द्वितीय प्रपाठक में स्वाध्याय तथा पंच महायज्ञों का वर्णन है और यहाँ गंगा–यमुना का मध्यक्षेत्र अत्यन्त पवित्र तथा मुनियों का निवास बताया गया है। तृतीय प्रपाठक चातुर्होत्र चिति के उपयोगी मन्त्रों का वर्णन प्रस्तुत करता है। चतुर्थ में प्रवर्ग्य के उपयोगी मन्त्रों का संग्रह है। यहां कुरूक्षेत्र तथा खाण्डव का वर्णन भौगोलिक स्थिति के अनुसार है। इस प्रपाठक में अभिचार मन्त्रों की भी सत्ता है जिनका प्रयोग शत्रु के मारण आदि के लिए किया जाता था। पंचम में यज्ञीय संकेतों की उपलब्धि होती है। षष्ठ प्रपाठक में पितृमेघ सम्बन्धी मन्त्रों का उल्लेख किया गया है। तथा अनेक मन्त्र ऋग्वेद से यहाँ उद्घृत किये गये हैं।[5] सपतम, अष्टम तथा नवम प्रपाठक तैत्तिरीय उपनिषद् है। दशम प्रपाठक नारायणीयोपनिषद् है, जो खिल–कांड माना जाता है।

यजुर्वेदीय उपनिषद्

ईशावस्योपनिषद

यह मध्यन्दिनशाखीय यजुर्वेद–संहिता का 40वाँ अध्याय हैं। आद्य पदों (ईशावास्यमिदं सर्वम्) के आधार पर इसका यह नामकरण है। इसमें केवल 18 मन्त्र हैं, जिसमें ज्ञानदृष्टि से कर्म की उपासना का रहस्य समझाया गया है। यह उपनिषद् कर्म–सन्यास का पक्षपाती न होकर यावज्जीवन निष्काम भाव से कर्म–सम्पादन का अनुरागी है। (श्लोक 2) और इसी का अनुवर्तन भगवद्गीता अनेक युक्तियों के उपन्यास के साथ करती है।

बृहदारण्यकोपनिषद्

यहपरिमाण में ही विशाल नहीं है, प्रत्युत तत्वज्ञान के प्रतिपादन में भी गम्भीर तथा प्रामाणिक है। इसमें छः अध्याय हैं। इस उपनिषद् के सर्वस्व दार्शनिक हैं। याज्ञवल्क्य, जिनकी उदात्त अध्यात्म – शिक्षा से यह ओत–प्रोत है। प्रथम अध्याय (छः ब्राह्मण) में मृत्यु द्वारा समग्र पदार्थों के ग्रास किए जाने का, प्राण की श्रेष्ठता विषयक रोचक आख्यायिका तथा सृष्टि विषयक सिद्धान्तों का वर्णन है। द्वितीय अध्याय (छः ब्राह्मण) के आरम्भ में अभिमानी गार्ग्य तथा शान्तस्वभाव काशी के राजा अजातशत्रु का रोचक संवाद है। इसी अध्याय (चतुर्थ ब्राह्मण) में हमारा प्रथम बार याज्ञवल्क्य से साक्षात्कार होता है, जो अपनी दोनों भार्याओं–कात्यायनी तथा मैत्रेयी को–अपना धन विभक्त कर वन में जाते हैं, तथा मैत्रेयी के प्रति उनकी दिव्य दार्शनिक–सन्देश की वाणी हमें यही श्रवणगोचर होती है। तृतीय तथा चतुर्थ अध्यायों में जनक तथा याज्ञवल्क्य का आख्यान है। तृतीय में जनक की सभा में नाना ब्रह्मवादियों का याज्ञवल्कय के हाथों परास्त तथा मौन होने को विशेष वर्णन है तृतीय में इस प्रकार महाराजा जनक वैदेह केवल तटस्थ श्रौता हैं, परन्तु, चतुर्थ में वे स्वयं महर्षि से तत्वज्ञान सीखतेहै। इस अध्याय को पंचम ब्राह्मण में कात्यायनी तथा मैत्रेयी का आख्यान पुनः स्पष्टतः वर्णित है। पंचम अध्याय में नाना प्रकार के दार्शनिक विषयों का विवेचन किया है, जैसे–नीति विषयक, सृष्टि विषयक तथा परलोक–विषयक तथ्या षष्ट अध्याय में प्रवहण जैबलि तथा श्वेतकेतु अरूणेय का दार्शनिक संवाद हैं, जिसमें जैबलि ने पंचाग्नि – विद्या का विशद विवेचन किया है। याज्ञवल्क्य का तत्वज्ञान बड़ा ही विशद, प्रामाणिक तथा तर्कपूर्ण है। उनका यह उपदेश बृहदारण्यक की आध्यात्मशिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है।

कठोपनिषद

कृष्णा यजुर्वेद की कठशाखा की अनुयायी यह उपनिषद् अपने गम्भीर अद्वैत तत्व के लिए नितान्त प्रख्यात है। इसमें दो अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में तीन वल्लियां हैं। तैत्तिरीय आरण्यक में संकेतित नचिकेता की उपदेशप्रद कथा से यह आरम्भ होता है। नचिकेता के विशेष आग्रह करने पर यम उस अद्वैत तत्व का मार्मिक तथा हृदयगम उपदेश देतेहैं। 'नेह नानस्ति किंचन' इस उपनिषद् का गम्भीर शंखनाद है। नित्यों में नित्य, चेतनों में चेतन वह एक ब्रह्म सब प्राणियों की आत्मा में निवास करता है। उसी का दर्शन शान्ति का एक मात्र साधन हैं (2/213), योग ही उसके साक्षात्कार का प्रधान साधन है।

मैत्रायण्युपउपनिषद

इस उपनिषद् में सात प्रपाठक हैं। पूरा उपनिषद् गद्यात्मक है, परन्तु स्थान–स्थान पर पद्य भी दिये गये हैं। अन्य उपनिषदों के भी निः सन्दिग्ध संकेत तथा उद्धरण यहाँ मिलते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद्

यह तैत्तिरीय आरण्यक का (सप्तम, अष्टम, तथा नवम खण्डों का) ही सम्मिलित अंश है। आरण्यक के सप्तम प्रपाठक का नाम है 'संहितोप उपनिषद्' जो यहाँ शीक्षावल्ली के नाम से विख्यात है। आरण्यक का वारूणी उपनिषद् (प्रपाठक आठ और नव) यहाँ ब्रह्मानन्दवल्ली और भृगुवल्ली के नाम से प्रख्यात है। अतः ब्रह्मविद्या की दृष्टि से वारूणी उपनिषद् का ही प्राधान्य है, परन्तु चित्त की शुद्धि तथा गुरू–कृपा की प्राप्ति के निमित्त शिक्षावल्ली का भी गौणरूपेण उपयोग इसमें कई प्रकार की उपासना तथा शिष्य और आचार्य सम्बन्धी शिष्टाचार का निरूपण है।

श्वेताश्वतरोपनिषद

यह उपनिषद् तो शैवधर्म के गौरव – प्रतिपादन के लिए निर्मित प्रतीत होता है। इसके द्वितीय अध्याय में योग का विशद प्राचीन विवेचन है। तृतीय से पंचम तक शैव तथा सांख्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन है। अन्तिम अध्याय में गुरूभक्ति का तत्व वर्णित है। गुरूभक्ति देवभक्ति का ही रूप है। यह उस युग की रचना है जब सांख्य का वेदान्त से पृथक्करण नहीं हुआ था। दोनों के सिद्धान्त मिश्रित रूप से उपलब्ध होते हैं। वेदान्त में अभी माया का सिद्धान्त विकसित नहीं हुआ था। त्रिगुणों की साम्यावस्यारूपा प्रकृति (अजा) का विवेचन निः सन्देह है (4/5–अजामेकां लोहित–कृष्ण शुक्लाम्), परन्तु अभी तक वह पूरा सांख्य–तत्व प्रतीत नही होता। शिव परमात्मतत्व

के रूप में अनेकशः वर्णित है (अमृताक्षरं हरः 1/10)। इस प्रकार सांख्य तथा वेदान्त के उदय काल के सिद्धान्तों की जानकारी के लिए यह उपनिषद् महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

यजुर्वेद संहिता में यज्ञ एवं वेदी का उल्लेख है यह संहिता एक प्राचीन विशिष्टता को दर्शाती है जहाँ कर्म–काण्डों व यज्ञों द्वारा मन तथा मानसिक वृत्तियों के स्वरूप का वर्णन मिलता है।

यजुर्वेद की इस संहिता में वेदी का निर्माण, यज्ञों का प्रचलन अग्नि एवं वायु देवता को प्रसन्न करने के लिए हवन–पूजन का वर्णन मिलता है। यजुर्वेद संहिता के इस शोध से यह प्रयास किया गया है कि इस संहिता द्वारा जिस ज्ञान का अविर्भाव हुआ है वह मन तथा मानसिक वृत्तियों का स्वरूप है। जिसके द्वारा सांसारिक जीवन का महत्व इसमें व्याप्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिस्ट्री आफ वैदिक लिटरेचर (अंग्रेजी), द्वितीय खण्ड, पृ0 151–156।*
2. *''आत्मा व अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मनतवयों निदिध्यासितन्यों मैत्रेय '' (वृहदा0 4/5/6)*
3. *कीथः तैत्तिरीय संहिता अंग्रेजी अनुवाद, भूमिकृ, पृष्ठ 85–103।*
4. *यजुर्वे की शाखाओं के वर्णन डा0 गंगासागर राय–*
5. *द्रष्टव्य बलदेव उपाध्याय– भागवत सम्प्रदाय,*